कृपा करता साँवरिया | By Sardar Romi |

कृपा करता साँवरिया
हर एक दीवाने पे
किसी पे किसी बहाने से
कहीं पर किसी बहाने से.....

दिन हीन वो भक्त सुदामा
बिलकुल था कंगाल
चला सुनाने श्याम सखा को
अपने दिल का हाल
श्याम से कुछ भी कह न पाया
दिल में रहा मलाल
लेकिन वो दरबार से लौटा
होकर मालामाल
कुटिया बन गई महल प्रभु के
तांडुल खाने से
किसी पे किसी बहाने से
कहीं पर किसी बहाने से.....

कर्म ने भक्ति का सबको
यही सबक सिखाया
प्रेम खिचड़ी का कर्मा ने
श्याम को भोग लगाया
भूखी राह निहारी
फिर भी साँवरिया न आया
याद किया भोली ने
फिर लहंगे का परदा लगाया
खाई खिचड़ी भाव से
प्रभु ने भोग लगाने से
किसी पे किसी बहाने से
कहीं पर किसी बहाने से.....

बेटी के घर नरसी पहुँचे
जब भरने को भात
साथ में थी भक्तों की टोली
खुद थे खाली हाथ
बेटी रोटी देख पिता ने
चूमा उसका माथ
बोले नरसी श्याम सलोना
भरेगा तेरा भात
प्रीत निभाई प्रभु ने
उस नरसी दीवाने से
किसी पे किसी बहाने से
कहीं पर किसी बहाने से.....

कृपा करता साँवरिया
हर एक दीवाने पे
किसी पे किसी बहाने से

कहीं पर किसी बहाने से.....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%95%e0%a5%83%e0%a4%aa%e0%a4%be-%e0%a4%95%e0%a4%b0%e0%a4%a4%e0%a4%be-%e0%a4%b8%e0%a4%be%e0%a4%81%e0%a4%b5%e0%a4%b0%e0%a4%bf%e0%a4%af%e0%a4%be-by-sardar-romi/